म.प्र. की जनजातियों की प्रमुख शिल्प-कला का अध्ययन

डॉ. संजय खरे

सह. प्राध्यापक - समाजशास्त्र

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

जनजातीय वह मानव जातीय समूह है जो दुर्गम स्थानों में रहती है जिनका शिल्पशास्त्र सरल होता है तथा जिनकी अर्थव्यवस्था अस्तित्व अभिमुख होती है। यह समूह अशिक्षित होता है तथा अपने अस्तित्व के लिए प्र.ति के साथ कठिन संघर्ष करता है। मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आदिवासी एवं ग्रामीण जनसंख्या का बाहुल्य होने के कारण विभिन्न तरह की शिल्प कलाओं की उत्पत्ति हुई है जैसे काष्ठ शिल्प, कंघी शिल्प, खराद शिल्प, टेराकोटा शिल्प, छीपा शिल्प, भरेवा शिल्प, लाख शिल्प, मिट्टी शिल्प, गुड़िया शिल्प, कठपुतली शिल्प, तीर-धनुष कला, बांस शिल्प, पत्ता शिल्प आदि प्रमुख आदिवासी कलाए हैं।

मुख्य शब्द - जनजातीय, शिल्प-कला, उपनिवेश

मानव समाज की विकास प्रक्रिया के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मानव समाज का विकास हजारों वर्ष पूर्व प्रारंभ होकर विकास के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए सभ्य समाज की ओर अग्रसर हुआ है अर्थात मानव समूह जंगल, पहाड़ों, सुदूर वनों,नदियों के किनारे निवास करते हुए एवं जंगल के उत्पाद (कंदमूल, फल) कच्चा मांस आदि खाते हुए विकास के कई चरणों को पार कर आधुनिक समाज की ओर आगे वढ़ा है।

समाज विकास के प्रारम्भिक चरण (मानव समूह) को जनजातीय समाज कहा गया हैं ये भारत में सुदूर वन प्रदेशो, पठार क्षेत्रों, पर्वतीय क्षेत्रों तथा घने जंगलों आदि स्थानों में निवास करने वाले मानव समूहों/समुदाय के रूप में प्रसिद्ध हैं। जनजाति शब्द हमें ब्रिटिश साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादियों द्वारा विरासत में प्राप्त हुआ है। जनजातीय शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम, अफ्रीका, एशिया, आस्ट्रेलिया तथा उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका में रहने वाले स्थानीय समुदाय को संवोधित करने के लिए अंग्रेजों ने किया, तत्पश्चात धीरे-धीरे इस शब्द का प्रयोग अन्य लोगों द्वारा भी किया जाने लगा। किन्तु वर्तमान में भी जनजाति अपने आप में एक भ्रामक शब्द है इसे विभिन्न समाजों ने अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया जिसके फलस्वरूप यह शब्द भ्रामक हो गया है कहीं इन्हें वनवासी, कहीं जनजाति, कहीं वन मानव तो कहीं आदिमानव के नाम से भी जाना जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि, ''जनजातीय वह मानव जातीय समूह है जो दुर्गम स्थानों में रहती है जिनका शिल्पशास्त्र सरल होता है तथा जिनकी अर्थव्यवस्था अस्तित्व अभिमुख होती है। यह समूह अशिक्षित होता है तथा अपने अस्तित्व के लिए प्रकृति के साथ कठिन संघर्ष करता है।''

जनजातियों पर वेरियर एल्विन और जी. एस. धुरिये के परिप्रेक्ष्य की विशेष चर्चा समाजशास्त्र में होती रही है जिसकी जड़ें स्वतंत्रता पश्चात भारत में रही हैं। एल्विन का तर्क था कि जनजातियां विशिष्ट समुदाय होती हैं अतः उन्हें अपने प्राकृतिक वातावरण में सुरक्षा चाहिए इसके विपरीत जी. एस. धुरिये का मानना था कि जनजातियां वृहद हिंदू समुदाय का अंग है और उन्हें उसी रूप में मान्यता मिलनी चाहिए। किन्तु वर्तमान में स्थितियां बदली हैं जनजातियां अब विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और भाषा समूह से जुड़ती जा रही हैं अब यह आवश्यक नहीं रहा कि वे निश्चित क्षेत्र में ही निवास करें। आज वे अपनी आजीविका और काम की तलाश में शहरों की ओर प्रवसन कर रही हैं साथ ही वर्तमान समाजशास्त्रीय परिदृश्य में भारत में जनजातियों की विषमता और भारत में वृहद समाजों में उनके संपर्क एवं स्थान के विषय में चर्चा की जा रही हैं।

दूसरी ओर भारत में जनजातियों की जनसंख्या के संदर्भ में कहा जा सकता है कि उनकी जनसंख्या चंडीगढ़, दिल्ली, हरियाणा तथा पांडिचेरी को छोड़कर लगभग सभी राज्य में है। भारत को उत्तरी और दक्षिणी भागों में बांटने वाली एक भौगोलिक पट्टी में इनकी जनसंख्या का एक बड़ा भाग रहता है उत्तर पूर्वी सीमांत क्षेत्र, संथाल परगना एवं छोटानागपुर क्षेत्र, बिहार, उड़ीसा तथा आंध प्रदेश के साथ-साथ मध्य भारत में मध्य प्रदेश से लेकर पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तक इनका फैलाव हैं।

आदिवासी कला का परिचय - भारतीय जनजातीय कला भारत में जनजातीय संस्कृति के सबसे आकर्षक भागों में से एक है। आदिवासी कलाओं का संग्रह बहुत बड़ा है और इसमें एक अद्भुत विविधता और सुंदरता है। भारतीय जनजातीय कला विभिन्न माध्यमों जैसे मिट्टी के बर्तनों, पेंटिंग, मेटलवर्क, ढोकरा आर्ट, पेपर-आर्ट, बुनाई और वस्तुओं जैसे आभूषण और खिलौनों के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियों को व्यक्त करती है। भारतीय जनजातीय शिल्प कला उच्च गुणवत्ता की है जो उनकी सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करती हैं।

आदिवासी कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय ग्रामीण सभ्यता का, दुर्भाग्यवश आदिवासी कलाओं का कोई क्रमिक इतिहास आज उपलब्ध नहीं है। सिंधु घाटी सभ्यता से मिले कला अवशेषों को यदि भारतीय आदिवासी कला के प्राचीनतम नमूने के रूप मे माना जाए तो उसके बाद इनका प्रमाणिक उल्लेख बीसवीं सदी के मध्य से मिलना आरंभ होता है जब कुछ अंग्रेज विद्वानों ने भारतीय देशी कलाओं का विस्तार से वर्णन किया। इस संबंध में डबल्यू जी आर्चर, वेरियर एल्विन एवं श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय के नाम प्रमुख हैं जिनके गहन अध्ययनों से भारतीय आदिवासी कला आज विश्व जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकी है। ये कलाएं न सिर्फ जनजातीय समाज की विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं वरन भारत की कुछ जनजातीय कलाएं अपने आप में अनूठी है जो उनके (जनजातीय समुदाय) गौरवपूर्ण इतिहास व विरासत को प्रदर्शित करती हैं।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातीय शिल्प-कलाएं -

मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आदिवासी एवं ग्रामीण जनसंख्या का बाहुल्य होने के कारण विभिन्न तरह की शिल्प कलाओं की उत्पत्ति हुई है। मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातीय शिल्प कलाएं इस प्रकार है-

➪ **काष्ठ शिल्प** - मध्यप्रदेश में काष्ठ शिल्प की परम्परा अतिप्राचीन है। आदिम युग से ही मनुष्य ने गाड़ी

के पहियों, देवी देवताओं की मूर्ति, घरों के दरवाजों, पाटो मुकुट आदि के रूप में काष्ठ शिल्प का निर्माण किया है। प्रदेश में कोरकु एवं भील आदिवासी क्षेत्रों में काष्ठ शिल्प का महत्वपूर्ण विकास हुआ है। यहां बनी लकड़ी की सामग्रियों की मांग ना केवल भारत के महानगरों में है, अपितु यूरोपीय देशों में भी यहां की बनी सामग्रियों की मांग बहुत ज्यादा है।

- कंघी शिल्प - कंघी बनाने का श्रेय बंजारा जनजाति को जाता है। प्रदेश में कंघी शिल्प के प्रमुख केंद्र उज्जैन, रतलाम, नीमच है। आदिवासियों द्वारा कंघियों पर अलंकरण, गोदना, भित्ति चित्रों का निर्माण किया जाता है।
- खराद शिल्प - प्रदेश की श्योपुर कला, बुधनी घाट, रीवा, मुरैना की खराद कला प्रसिद्ध है। खराद-सागौन, कदम्ब गुरजेल, मेडला, सराई, खैर आदि वृक्षों की लकड़ी पर की जाती है। खराद कला में खिलौने एवं सजावट की सामग्री बनाई जाती है।
- टेराकोटा शिल्प - मंडला जिले में निवास करने वार्ल. जनजातियां गोंड, बैगा. प्रधान, धीमा और ओरिया, पटरी आदि टेराकोटा शिल्प के शिल्पी है। इस शिल्प में धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं में काम आने वाली प्रतिमाओं का निर्माण होता है, जिसमें बड़ादेव, फुलवारी देवी की प्रतिमाएं प्रसिद्ध है। इस शिल्प में तरह-तरह के खिलौने, सजावटी सामान और गमलों का निर्माण किया जाता है।
- छीपा शिल्प - छीपा शिल्प कपड़े पर बनाया जाता है, जिसमें भील आदिवासियों के विभिन्न जातीय प्रतीकों का समावेश होता है। धार, कुक्षी, मनावर, उज्जैन, छीपा शिल्प के प्रमुख केंद्र है। उज्जैन का छीपा शिल्प को भेरूगढ़ के नाम से देश एवं विदेश में प्रसिद्धि प्राप्त है।
- भरेवा शिल्प - बैतूल के आदिवासियों द्वारा धातु से दैनिक उपयोग की कलात्मक वस्तुएं तथा देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई जाती है।
- लाख शिल्प - मध्यप्रदेश में उज्जैन, इंदौर, रतलाम, मंदसौर, महेश्वर लाख शिल्प के परम्परागत केंद्र हैं। प्रदेश में लकार जनजाति द्वारा लाख के चूड़े, कलात्मक खिलौने, श्रृंगार-पेटियां, डिबियां, अलंकृत पशु-पक्षी आदि कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती हैं।
- भीली शिल्प - धार एवं झाबुआ जिले में भीली महिलाएं दैनिक उपयोग के लिए सुंदर एवं कोमल पटवा मोती की माला एवं थैलियां बनाती हैं।
- मिट्टी शिल्प - मिट्टी शिल्प सर्वाधिक प्राचीन शिल्प कला है मनुष्य ने अपने आरंभिक समय से ही विभिन्न तरह के खिलौने, मूर्तियां आदि बनाए हैं। प्रदेश में मिट्टी शिल्प झाबुआ, मंडला के कुम्हारों द्वारा विशेष रूप से बनाए जाते हैं। बैतूल के मिट्टी शिल्प भी अपनी निजी विशेषताओं के कारण बहुत प्रसिद्ध है।
- गुड़िया शिल्प - प्रदेश में नए पुराने वस्त्रों एवं कागजों से गुड़िया बनाने की लोक परम्परा है। ग्वालियर अंचल में कपड़े, लकड़ी और कागज से बनाई जाने वाली गुड़ियों की परम्परा है। ग्वालियर अंचल की गुड़ियाएं अपने विशिष्ट आकार, प्रकार एवं वेशभूषा के कारण बहुत अधिक लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध

हैं।

- कठपुतली शिल्प - कठपुतली के द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं एवं कथाओं को नाटकीय अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है। कठपुतली की प्रसिद्ध पात्र अनारकली, बीरबल, अकबर, पुंगी वाला घुड़सवार, सांप और जोगी होते हैं। प्रदेश के सभी अंचलों में कठपुतली शिल्प प्रचलित है।
- तीर-धनुष कला - तीर-धनुष कला प्रदेश की भील पहाड़ी, कोरवा, कमार आदि जनजातियों में विशेष रूप से प्रचलित है। तीर-धनुष, बाण, मोर, पंख, लकड़ी, लोहा, रस्सी, आदि सामग्रियों से मिलकर बनाए जाते हैं।
- बांस शिल्प - प्रदेश में बांस शिल्प का प्रमुख केंद्र झाबुआ एवं मंडला जिले में है। यहाँ के आदिवासी बांस से सुंदर एवं जीवन में उपयोग आने वाली वस्तुओं का बहुत अच्छे तरीके से निर्माण करते हैं जो कि काफी लोकप्रिय है।
- पत्ता शिल्प -पेड़ के पत्तों से कलात्मक खिलौने, चटाई, आसन, दूल्हा-दुल्हन के मोढ़े आदि बनाए जाते हैं। पत्तों की कोमलता के अनुरूप होने में विभिन्न कलाकृतियों को बनाया जाता है। पत्ता शिल्प के कलाकार मुख्यतः झाड़ू बनाने वाले होते हैं।

भारतीय जनजातीय कला हमेशा सकारात्मक विषयों और विचारों जैसे कि जन्म, जीवन, विवाह, फसल, यात्रा या त्योहार को चित्रित व प्रदर्शित करती हैं। भारतीय जनजातियां का अपनी भूमि से जुड़ाव होता हैं तथा वे धरती माता और इसके महत्वपूर्ण तत्वों के प्रति अपार श्रद्धा भाव रखते हुए अपनी इन शिल्प कलाओं के माध्यम से अपने आदिवासी सरल जीवन को प्रदर्शित करती हैं और सामान्य उपयोग की वस्तुओं का प्रयोग कर इन सुंदर शिल्पों का निर्माण करती हैं। इन सुंदर शिल्प कलाओं के माध्यम से वे वर्तमान समकालीन समय मे वैश्विक रूप से अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं। मध्य प्रदेश की जनजातीय भी अपनी इन शिल्प कलाओं के माध्यम से अपनी संस्कृति व परम्पराओं को विश्व के हर कोने तक पहुंचा रही हैं।

सन्दर्भ -

1. एल्विन, वी., दि एबोरिजिनलस, मुम्बई : आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1944
2. बेली, एफ.जी., ट्राइब एण्ड कास्ट इन इंडिया, कट्रिब्यूशन टू सोशियोलॉजी (5), 1961
3. धुरिये, जी. एस., दि शिड्यूल ट्राइब्स, मुम्बई : पापुलर प्रकाशन, 1963
4. तिवारी, शिवकुमार, म.प्र. के आदिवासी, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1994
5. श्रीवास्तव, ए.आर.एन., सामाजिक अनुसंधान, के.के. पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1999
6. तिवारी, शिवकुमार, मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्.ति, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2006
7. भलावी, एम.एस., मध्यप्रदेश की प्रमुख कारीगरी, बुलेटिन, वॉल्यूम न.54, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था भोपाल, 2013